आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 11 अंक : 10 जून, 2024 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

वैश्विक खाद्य सुरक्षा के लिए दूध एक महत्वपूर्ण आहार: कुलपति

विश्व दुग्ध दिवस पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं। राजस्थान की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में पशुपालन का विशेष महत्व है। पशुपालन लघु व सीमान्त पशुपालकों के लिए जीविकोपार्जन का आधार ही नहीं बल्कि रोजगार और आय प्राप्ति का सुदृढ़ एवं सहज स्त्रोत भी है। भारत में लगभग 2 करोड़ लोग अपनी आजीविका के लिए पशुपालन पर आश्रित है। पशुपालन क्षेत्र भारत के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 4 प्रतिशत का योगदान करता है। भारत विश्व का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश है। दूध मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए बहुत ही लाभदायक एवं दूध को एक सम्पूर्ण आहार भी माना जाता है। दूध के महत्व को ध्यान में रखते हुए प्रतिवर्ष जून माह के पहले दिन विश्व दुग्ध दिवस मनाया जाता है। इस दिन का प्रमुख उद्देश्य डेयरी उद्योग से जुड़ी गतिविधियों को बढ़ावा देना है एवं इस दिन को मनाने का विचार खाद्य व कृषि संगठन की ओर से वर्ष 2001 में प्रस्तावित किया था। इस दिवस को मनाये जाने का कदम विश्व में दुग्ध उत्पादों को बढ़ावा देकर भुखमरी और कुपोषण की समस्या से लड़ना था। दुग्ध और दुग्ध उत्पाद वैश्विक खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। डॉ. वर्गीस कुरियन के द्वारा शुरू की गई श्वेत क्रांति का ही परिणाम है कि भारत आज विश्व में सबसे अधिक दुग्ध उत्पादन करता है। हर वर्ष विश्व दुग्ध दिवस की थीम विश्व को पोषण देने के लिए गुणवत्तापूर्ण पोषण प्रदान करने में डेयरी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रदेश के लघु व सीमान्त पशुपालकों की मेहनत का ही परिणाम है कि राजस्थान भी दुग्ध उत्पादन में भारत का अग्रणी प्रदेश है। विश्व दुग्ध दिवस के दिन स्कूलों, कॉलेजो में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं तथा दुग्ध उत्पादों की प्रदर्शनीयां व दुग्ध मेलों का आयोजन भी किया जाता है। साथ ही सोशल मीडिया के माध्यम से भी विभिन्न प्रकार की पोस्ट और हैशटैग्स के माध्यम से दूध के बारे में जागरूक किया जाता है।

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर भी अपने संगठक महाविद्यालयों व अन्य विभिन्न इकाईयों के माध्यम से गोष्ठियां, संवाद, निबन्ध लेखन व अन्य कार्यक्रम आयोजित कर आमजन को दुग्ध व दुग्ध उत्पादों के महत्व के बारे में जागरूक करने जा रहा है। विश्व दुग्ध दिवस के अवसर पर पशुपालन क्षेत्र से जुड़े सभी पशुचिकित्सकों, पशुचिकित्सा कार्मिकों, पशुपालक व किसान भाइयों को पुनः शुभकामनाएं व बधाई।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

विश्वविद्यालय स्थापना दिवस का भव्यता पूर्वक आयोजन

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के 15वें स्थापना दिवस का भव्यता पूर्वक कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग के अध्यक्षता में 18 मई को आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. रामेश्वर सिंह, कुलपति वेटरनरी विश्वविद्यालय पटना (बिहार) ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि देश को प्राकृतिक संरक्षण एवं संसाधनो के समुचित उपभोग के विषय में राजस्थान एक मिसाल बन गया है। सीमित संसाधनों के होते हुए भी राजस्थान देश में दुग्ध उत्पादन में प्रथम स्थान पर है। पशुपालन का देश की जी.डी.पी. में अमूल्य योगदान है हमें पशु उत्पादन हेतु नवीन तकनीकों एवं शोधो के माध्यम से गुणवत्ता युक्त पशु उत्पादों पर ध्यान देना होगा। डॉ. राजेश शर्मा (पूर्व आई.ए.एस.) सदस्य राजस्थान विद्युत विनियामक आयोग, ऊर्जा विभाग, राजस्थान सरकार ने विश्वविद्यालय द्वारा पशुचिकित्सा, शोध एवं प्रसार के क्षेत्र में प्रगति एवं कार्यो की सराहना की। विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय ने 14 साल के अल्प काल में ही पशुचिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान एवं प्रसार कार्यक्रमों के माध्यम से देश में विशेष पहचान बनाई है। विश्वविद्यालय का सुदृढ़ीकरण इसके विकास में सहयोगी रहा है। प्रो. गर्ग ने विद्यार्थियों हेतु अनुभव शिक्षण, उद्यमिता एवं गुणात्मक शोध के महत्व पर बल दिया। प्रो. अरुण कुमार, कुलपति स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर ने विश्वविद्यालय के 15वें स्थापना दिवस की सभी को बधाई देते हुए कहा कि स्थापना दिवस के अवसर पर हमें हमारे उद्देश्यों की पूर्ति एवं भविष्य योजना का आकलन करना चाहिए। वेटरनरी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा कि किसी भी विश्वविद्यालय के प्रगति परस्पर सहयोग समन्वय एवं विशेष कार्ययोजना से ही संभव हो सकती है। प्रो. गहलोत ने विश्वविद्यालय के प्रगति सौपान का जिक्र करते हुए राज्य सरकार, पशुपालन विभाग, आई.सी.ए.आर. के सहयोग हेतु आभार व्यक्त किया। अधिष्ठाता वेटरनरी कॉलेज प्रो. ए.पी. सिंह ने स्वागत भाषण दिया। प्रति कुलपति प्रो. हेमन्त दाधीच ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रो. ठाकुर एवं प्रो. शर्मा राजुवास की गतिविधियों से हुए रूबरू

प्रो. केशव सिंह ठाकुर, कुलपति गोविन्द गुरू जनजातीय विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा और प्रो. अशोक शर्मा, पूर्व कुलपति वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा द्वारा 24 मई को वेटरनरी विश्वविद्यालय बीकानेर के डीन–डॉरेक्टर एवं अधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक की अध्यक्षता कर रहे वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षा, शोध एवं प्रसार के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों की विस्तृत जानकारी प्रदान की। प्रो. गर्ग ने विश्वविद्यालय के पशु अनुसंधान केन्द्रों पर राज्य में देशी नस्लों के संरक्षण एवं संवर्धन, पशु विज्ञान केन्द्रों द्वारा पशुपालको के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण तथा संघटक वेटरनरी एवं डेयरी महाविद्यालय द्वारा शैक्षणिक एवं पशुचिकित्सा एवं पशुउत्पादन के कार्यों की जानकारी प्रदान की।

अकादमिक परिषद् की 26वीं बैठक

वेटरनरी विश्वविद्यालय की 26वीं अकादमिक परिषद् की बैठक कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में 20 मई को आयोजित की गई। कुलपति प्रो. गर्ग ने अकादमिक परिषद् के सभी सदस्यों का स्वागत किया एवं गत बैठक के सभी बिन्दुओं पर विचार विमर्श करते हुए कार्य अनुपालना को सर्वसम्मति से अनुमोदित किया गया। बैठक में कार्यवाहक कुलसचिव बी.एल. सर्वा द्वारा बैठक में एजेण्डे प्रस्तुत किये गये तथा अकादमिक परिषद् के सदस्यों द्वारा पशुचिकित्सा शिक्षा के विभिन्न एजेन्डों का अनुमोदन किया गया। बैठक में युवाओं में पशुपालन एवं उद्यमिता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से उन्नत भेड़, बकरी एवं मुर्गीपालन के विभिन्न प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों की अनुशंसा की गई। परिषद् ने विद्यार्थियों में स्कील विकास एवं स्वरोजगार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को शुरू करने तथा सेवारत एवं प्राईवेट वेटनेरियन हेतु वेटरनरी डॉयग्नोस्टिक इमेजिंग, वेटरनरी आथ्रेलमोलॉजी, वेटरनरी आर्थोलॉजी, क्लीनकल पैथॉलॉजी आदि विषयों पर स्वपोषित आधार पर सर्टीफिकेट पाठ्यक्रमों को शुरू करने की अनुशंसा की गई। इसी तरह गौशाला मैनेजर, प्रबंधकों हेतु गोबर एवं गौमूत्र प्रसंस्करण विषय पर शार्ट टर्म प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करने की भी अनुशंसा की गई।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी

गाढवाला में जैविक पशुपालन पर प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए गए ग्राम गाढ़वाला में विश्वविद्यालय के जैविक पशुधन उत्पाद तकनीक केन्द्र द्वारा "जैविक पशुपालन का आर्थिक महत्व" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 31 मई को आयोजित किया गया। केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक डॉ. विजय कुमार बिश्नोई ने बताया कि जैविक पशुपालन आज के समय की महत्ती आवश्यकता है क्योंकि कृषि और पशुपालन के क्षेत्र में रसायनों, उर्वरकों का अंधाधुंध उपयोग किया जा रहा है जिसके कारण मनुष्य और पशुओं में कई बीमारियां फैल रही हैं। पशुपालक भाई जैविक पशुपालन को अपनाकर मानव एवं पशु जीवन का स्वस्थ एवं निरोगी बना सकते है। इसके साथ ही डॉ. बिश्नोई ने तेज गर्मी को देखते हुए पशुओं को तापघात से बचने के उपायों के बारे में भी बताया। यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने जैविक पशुपालन के आर्थिक महत्व के बारे में विस्तार से बातया। केन्द्र की डॉ. प्रियंका ने जैविक दुग्ध एवं मानव स्वास्थ्य पर व्याख्यान दिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 45 पशुपालक शामिल हुए जिनको जैविक पशुपालन संबंधी फार्म लिटरेचर वितरित किये गये। प्रशिक्षण में प्रगतिशील पशुपालक भागीरथ गोदारा और बाबूलाल के साथ केन्द्र के भीख सिंह भी उपस्थित रहे।

हेल्थ चैकअप शिविर

विद्यार्थियों व शिक्षकों की उच्च रक्तचाप व स्वास्थ्य की हुई जांच

वेटरनरी विश्वविद्यालय, इंडियन रेडक्रॉस सोसाइटी, इंडियन सोसाइटी ऑफ हाइपरटेंशन और एस.पी. मेडिकल कॉलेज, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में वेटरनरी विश्वविद्यालय के अधिकारियों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों हेतु 25 मई को उच्च रक्तचाप एवं स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने शिविर के दौरान सम्बोधित करते हुए कहा कि उच्च रक्तचाप के लिए जीवन में वातावरण और खानपान की शैली के साथ तनाव की स्थिति जिम्मेदार है। प्रो. गर्ग ने कहा कि युवाओं एवं आमजन सोने–उठने के समय, खान–पान की आदत एवं दिनचर्या में बदलाव करके उच्च रक्तचाप की समस्या से निजात पा सकते है। एस.पी. मेडिकल कॉलेज, औषधीय विभाग के प्रो. बी.के. गुप्ता के नेतृत्व में चिकित्सा दल ने लोगों के स्वास्थ्य की जांच कर परामर्श दिया। इंडियन रेडक्रॉस सोसाइटी, बीकानेर के विजय खत्री, राजेन्द्र जोशी, अधिष्ठाता प्रो. ए.पी. सिंह, प्रति कुलपति प्रो. हेमन्त दाधीच ने भी सम्बोधित किया। कुल 184 विद्यार्थियों, कर्मचारियों व शिक्षकों ने स्वास्थ्य जांच शिविर का लाभ उठाया।

नवीं अनुसंधान परिषद् बैठक

अनुसंधानों के सकारात्मक परिणामों का पशुपालकों तक लाभ पहुंचे : कुलपति प्रो. गर्ग

वेटरनरी विश्वविद्यालय अनुसंधान परिषद् की नवीं बैठक 27 मई को कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि विश्वविद्यालय में स्थित दस एडवांस अनुसंधान केन्द्र विश्वविद्यालय की विशेष पहचान है जिसके अन्तर्गत पारम्परिक पशुचिकित्सा पद्धति, वन्यजीव प्रंबधन, पशुधन चारा संसाधन, पशु विज्ञान अभियांत्रिकी, पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण, पशुजैव विविधता, टीकाकरण एवं जैविक उत्पादन, अंतरिक्ष आधारित तकनीक, पशु रोग निदान आदि प्रमुख विषयों पर शोध एवं तकनीकी विकास के कार्य किये जा रहे है। प्रो. गर्ग ने केन्द्रों के प्रमुख अन्वेषकों को निर्देशित करते हुए कहा कि अनुसंधानों के सकारात्मक परिणामों का लाभ पशुपालकों तक पहुंचे तथा उच्च गुणवत्ता वाले शोधों को पेटेंट हेतु क्रियान्वयन करने होंगे। अनुसंधान निदेशक प्रो. हेमन्त दाधीच ने परिषद् की बैठक का संचालन करते हुए प्रगति विवरण प्रस्तुत किया तथा विभिन्न एडवांस अनुसंधान केन्द्रों एवं आई.सी.ए.आर. परियोजनाओं के प्रमुख अन्वेषकों ने अपने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किये।

नवीं प्रसार शिक्षा परिषद् बैठक

प्रशिक्षणों से पशुपालकों के स्वावलम्बन को बढ़ावा मिले : कुलपति प्रो. गर्ग

वेटरनरी विश्वविद्यालय की प्रसार शिक्षा परिषद् की 9वीं बैठक 28 मई को कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक को सम्बोधित करते हुए कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत संचालित 16 पशु विज्ञान केन्द्रों एवं कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा राज्य के पशुपालकों के कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों, रोग निदान सेवाओं और कृषक सलाहकारी सेवाओं के माध्यम से ना केवल राज्य के पशुपालकों एवं युवाओं को पशुपालन आधारित स्वावलम्बन एवं संबल मिल रहा है अपितु राज्य के दूर–दराज गांव ढाणी तक पशुपालकों तक नवीन तकनीकों के हस्तांतरण से आर्थिक उत्थान भी संभव हो रहा है। बहुत से पशुपालकों ने प्रशिक्षण उपरान्त स्वयं के पशुपालन व्यवसाय भी शुरू किये है। प्रो. गर्ग ने कहा कि पशुपालन आधारित अधिकांश कार्य महिलाओं द्वारा सम्पादित किये जाते है अतः प्रशिक्षणों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण एवं महिला स्वावलम्बन पर विशेष ध्यान देना होगा। प्रो. गर्ग ने प्रभारी अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि पशु विज्ञान केन्द्र एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को ध्यान देते हुए कार्य करें तथा पशुपालकों के आजीविका बेहतर बनाने हेतु हर संभव प्रयास करें। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने वर्ष 2022–23 एवं 2023–24 का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए सभी केन्द्रों द्वारा संचालित गतिविधियों को विस्तृत रूप से बताया। प्रभारी अधिकारी पशु विज्ञान केन्द्रों द्वारा बैठक में पशु विज्ञान के कार्यों का प्रस्तुतीकरण किया गया।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू) द्वारा 6, 8, 16, 21 एवं 24 मई को गांव नरसी नगर, ढाणी मोतीसिंही, ख्याली, न्यांगली एवं लीलकी गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 131 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 4 एवं 15 मई को गांव सुन्दरपुरा एवं मनीवाली गांवों में एवं 18 एवं 21 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 161 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 7, 8, 9, 13, 14, 18 एवं 20 मई को गांव शाहपुर, थैराबर, ऑखोली, बरई, गारोली, जनूथर एवं श्योपुरा गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 138 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 7,13, 20 एवं 24 मई को गांव फुसपुरा, ओडी का पुरा, लुहारी एवं अंगई गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 134 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 3, 8 एवं 13 मई को को गांव सुराणा, सहनीवाला एवं बामनवाली गांवों में तथा 18 व 31 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 151 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 7, 16 एवं 18 मई को गांव मीरपुर, जावाल एवं अणगोर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 88 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) द्वारा 8, 9, 17, 29 एवं 30 मई को गांव श्यामपुरा, लेडी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 116 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 4, 6, 9, 13, 16 एवं 22 मई को गांव राजनगर, रामराजपुरा, राजपुरा, नयागांव, दशलाना एवं जाखोडा गांवों में तथा 18 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 164 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 7, 9, 13, 18, 23, 25 एवं 27 मई को गांव नारवा, जाजीवाल विश्नोइयां, रूडकली, मणई, थबूकड़ा एवं गुजरावास गांवो में तथा दिनांक 28 एवं 30 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 222 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 6, 9, 17 एवं 21 मई को गांव सोड़ा, धानोता, बावड़ी एवं रामपुराबास में तथा दिनांक18 मई को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 138 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 9, 15, 17, 20, 21 एवं 29 मई को गांव पाटीदार फलां नरणीया, बोर का पानी, कांकरी, तलइया अरा, खुदेरड़ा एवं मीगई गांवों में तथा 4 एवं 6 मई को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय एंव तीन दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 213 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 20 एवं 24 मई गांव डूमरा एवं घोडीवारा गांवो में एक दिवसीय तथा दिनांक 6–8 मई को केन्द्र परिसर में आयोजित तीन दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों से 76 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा (चित्तौडगढ़) द्वारा केन्द्र परिसर में 6–8 मई को तीन दिवसीय एवं 30 मई को एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 50 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर (जयपुर) द्वारा को गांव को 6, 8, 14, 17, 18, 21, 24, 25 एवं 28 मई को गांव माल्यावास, मुरलीपुरा, सांभर, सरना चौड, कुड़ियों का बास, जोबनेर, लोरवाड़ा, हिगोनिया एवं धानक्सा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 176 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 1, 7, 14, 17, 21, 24 एवं 28 मई को गांव थूर, देलदारी, मांडोली, रामसीन, पावली, भीमपुर एवं खानपुर गांवों में तथा आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 100 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर–पाली

पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर (पाली) द्वारा 3, 4, 6, 7, 24 एवं 25 मई को गांव गिरारी, केरली, गुड़ाराम, ददाई, सिंघड़ी एवं गुडा भीमसिंह गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 72 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 29 अप्रेल से 8 मई एवं 18 मई से 27 मई को केन्द्र परिसर में दस दिवसीय एवं 6 मई को गांव छेलासरी में एक दिवसीय कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 96 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

पशुओं में पाइका रोग

पाइका (एलोट्रओफेजिया):

पाइका खाने से संबंधित एक तरह का विकार है। पाइका रोग से ग्रसित पशु नॉन फूड आइटम (अखाद्य वस्तुएं), हानिकारक और अनावश्यक चीज जैसे प्लास्टिक, कागज, मिट्टी, कपड़ा, चमडा, पुराने जूते, लकड़ी, ठाण, खिलौने, मल, पशु खुद का पेशाब, कीचड़ आदि खाने लग जाते हैं। यह बीमारी समान रूप से सभी प्रकार के पशुओं में देखी जा सकती है।

पाइका से सम्भव आर्थिक नुकसानः

इस बीमारी के कारण पशुपालक को भारी आर्थिक हानि होती है क्योंकि पशु शारीरिक रूप से कमजोर होकर दूध का उत्पादन कम कर देता है। अतः कई बार पशु बांझपन का शिकार भी हो जाता है। ये बीमारी दुधारू व अन्य पशुओं के लिए जानलेवा भी साबित हो सकती है क्योंकि पशु इस बीमारी के कारण अखाद्य व अपाचक पदार्थ जैसे प्लास्टिक व लोहे की कीलें खाने के साथ रुमेन में चली जाती है जिसके कारण पशु में आफरा आने लगता है तथा इस कारण कई बार ट्रॉमेटिक रेटिकुलो पेरिटोनिटिस/फॉरेन बॉडी सिंड्रोम जैसी जानलेवा बीमारी भी हो जाती है जिसके कारण पशु की मृत्यु हो जाती है। इसीलिए पशुपालक इस बीमारी के प्रति जागरूक और सजग रहते हुए अपने नजदीक पशुचिकित्सक से सलाह लेकर तुरंत उपचार करवायें, जिससे पशुपालक जागरूक बने और अपने पशुधन को बचा कर पशुपालकों को होने वाली आर्थिक हानि से बचा सके।

पाइका रोग होने के कारणः

- पशु में मिनरल जैसे की फोस्फोरस, कोबाल्ट, आयरन, नमक व अन्य खनिजों की कमी होना।
- पशु को कम जगह में रखना।
- पशु के पेट में कीड़े या वर्म का संकम्रण होना।
- पशु में पेट व पित्ताशय संबंधित रोग होना।
- विटामिन 'बी' की कमी होना।
- आहार में प्रोटीन की कमी होना।
- अपापचय रोग जैसे किटोसिस, पीपीएच, इत्यादि का होना।

पाइका की पहचानः

- पशु खाना पीना कम कर देता है।
- पशु अखाद्य पदार्थ खाने लगता है।
- पशु का उत्पादन कम व शारीरिक रूप से कमजोर हो जाता है।
- चमड़ी की चमक कम हो जाती है और चिपक जाती है।
- कई बार आफरा व अन्य बीमारियां भी हो जाती है।

पाइका के प्रकारः

- **कोप्रोफेजियाः** इसमे पशु स्वंय या अन्य पशु का मल या गोबर खाने लग जाता है।

- **इनफेंटोफेजियाः** इसमें मादा पशु द्वारा स्वयं के छोटे नवजात बच्चों को खाना।
- **ऑस्टियोफेजियाः** मृत जानवरों की हड्डीयाँ चाटना या चबाना।
- **पाइलोफेजियाः** इनमें पशु स्वंय या अन्य पशु के बालों को चाटने और खाने लग जाता है।
- **जियोफेजियाः** इसमें पशु मिट्टी खाने लग जाता है।

पाइका रोग उपचारः

- पशु को पौष्टिक व संतुलित आहार (खनिज लवण युक्त) देना चाहिए जिससे पशु में सभी आवश्यक तत्वों की पूर्ती हो सके।
- पशु को हर 3 महीने के अन्तराल पर कृमिनाशक दवा देनी चाहिए।
- पशु को प्रतिदिन 40–50 ग्राम मिनरल मिक्सचर बांटे में आवश्यक रूप से देना चाहिए। जो विभिन्न प्रकार के विटामिन व खनिज लवण युक्त होता है।
- पशु के ठाण में काले नमक व मिनरल मिक्सचर की ईंट भी रख सकते हैं।
- पशु को प्रतिदिन 50 ग्राम सादा नमक आहार में देना चाहिए।
- पाइका रोग होने के उपरान्त विटामिन 'ए' 'डी' 'ई' एवं फोस्फोरस इंजेक्शन पशुचिकित्सक के दिशा निर्देशनुसार लगवायें।

डॉ. मैना कुमारी, सहायक आचार्य एवं डॉ. मनीष कुमार
पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़

पशुधन क्षेत्र में प्रतिजैविक दवाओं का व्यापक उपयोग व स्वास्थ्य पर प्रभाव

प्रतिजैविक दवाएं ऐसे रसायन होते है जो पशुओं व मनुष्यों में जीवाणुओं को नष्ट करने तथा जीवाणुओं के संक्रमण को रोकने के उपयोग में लिए जाते हैं। ये दवाइयां कीटाणुओं द्वारा संक्रमण में जादूई रूप से कार्य करते हैं। 1940 के दशक में प्रतिजैविक की शुरूआत के बाद से ही ये आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं में केन्द्रीत रहा है। प्रतिजैविक दवाओं का निर्माण व उपयोग व्यापक रूप से मानव व पशुचिकित्सा में जीवाणुओं के संक्रमण के इलाज के लिए किया जाता रहा है। परन्तु जीवन रक्षक होते हुए भी इन दवाओं का एक दूसरा हानिकारक पहलू भी सामने आया है। इन दवाओं का अत्यधिक, अनियंत्रित व अनुचित उपयोग मनुष्य और पशु दोनों के लिए बहुत बड़ा खतरा बन गया है। प्रतिजैविक दवाओं के दुरूपयोग के कारण बहुत से जीवाणु में इन दवाओं के प्रति प्रतिरोधकता विकसित हो गई है जिससे इन दवाओं का प्रभाव समाप्त या कम हो जाता है। इस कारण कई बार संक्रमण लाइलाज हो जाता है। ऐसे प्रतिरोधी क्षमता वाले जीवाणु वातावरण में फैलकर पशुओं व मनुष्यों में जान लेवा संक्रमण का कारण बन जाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक सर्वे में कहा गया है कि प्रतिवर्ष 20 लाख से अधिक अमेरिकी लोग प्रतिजैविक प्रतिरोधी जीवाणुओं से संक्रमित हो रहे हैं तथा इनमें से 23000 लोगों की मृत्यु प्रतिवर्ष हो जाती है। युरोपीय संघ में भी इनसे होने वाली सालाना मृत्यु दर लगभग 25000 से ज्यादा है। भारत जैसे विकासशील देशों में स्थिति ओर भी खराब है। रोगाणुरोधी प्रतिरोध एक प्रमुख स्वास्थ्य चुनौती के रूप में सामने आ रही है।

पशुपालन में प्रतिजैविक दवाओं का उपयोगः पशुपालन क्षेत्र में इन प्रतिजैविक दवाओं का उपयोग निम्न उद्देश्यों के लिए किया जाता है।

चिकित्सकीय उपयोगः संक्रामक रोग घरेलू जानवरों की एक सामान्य समस्या है। पशुचिकित्सकों को इन रोगों के उपचार के दौरान संक्रामक विरोधी दवाओं की आवश्यकता होती है। इन रोगों के उपचार में प्रतिजैविक दवाओं का उपयोग मुख्य रूप से किया जाता है। आमतौर पर इन दवाओं की मात्रा अधिक होती है। इसके विपरित जब इन दवाओं का उपयोग अन्य कारणों जैसे रोगों से बचाव या रोगों की रोकथाम अथवा पशुओं में शारीरिक विकास के लिए उपयोग किया जाता है तो खुराक (डोज) कम रखी जाती है। आजकल पशुपालन क्षेत्र में भी इन दवाओं का अंधाधूंध उपयोग किया जा रहा है। पशुओं की बीमारियों के उपचार के लिए प्रतिजैविक औषधियों का अधिक मात्रा में उपयोग के कारण इनके अवशेष पशु अपशिष्ट द्वारा खेतों, जलाशयों एवं वातावरण में फैल जाते हैं। साथ ही औषधियों के अवशेष दूध, मांस व अण्डें में भी मिल रहे हैं जिससे मानव स्वास्थ्य व पर्यावरण को नुकसान हो रहा है।

पशु उत्पाद या शारीरिक विकास के लिए पशु आहार में उपयोगः पशु–पक्षियों के दाना–पानी में भी प्रतिजैविक दवाओं को मिश्रित किया जाता है, ताकि पशुओं में शारीरिक विकास तथा उत्पादन में बढ़ोतरी हो व अधिक लाभ प्राप्त किया जा सके। डेयरी व पॉल्ट्री उद्योग में प्रतिजैविक दवाओं का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जा रहा है। प्रतिजैविक दवाओं को चारे में मिलाकर खिलाया जाता है। ये प्रतिजैविक अपरिवर्तित अथवा सक्रिय चयापचयों के रूप में उत्सर्जित होता है। पशुओं से उत्सर्जित पदार्थ खाद के रूप में उपयोग लिया जाता है। खाद में उत्सर्जित प्रतिजैविक की मात्रा कम होती है परन्तु जीवाणुओं में प्रतिजैविक प्रतिरोध उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त होता है। मनुष्यों और पशुओं में जीवाणु संक्रमण के उपचार व रोकथाम के लिए विभिन्न प्रकार की दवाओं का उपयोग बड़े पैमाने पर किया जाता है। बढ़ती जनसंख्या के कारण पशुजनित खाद्य पदार्थो की मांग दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है अधिक उत्पादन के लिए पशुओं में रोगों के बचाव व उनकी रोकथाम अत्यावश्यक है। इसके साथ कई जीवाणुरोधी पदार्थो का उपयोग पशुओं के आहार या पानी में भी किया जाता है।

प्रतिजैविक का जनस्वास्थ्य पर प्रभावः जिस प्रकार से मनुष्य व पशु रोगों में जीवाणुओं को नष्ट करने के लिए नई–नई दवाओं का आविष्कार हो रहा है उसी प्रकार जीवाणु भी अपने बचाव में लगे रहते है जिससे इन जीवाणुओं में प्रतिजैविक प्रतिरोध क्षमता विकसित होती है जिस पर इन प्रतिजैविक औषधियों का कम प्रभाव होता है। मनुष्यों व पशुओं के इन दवाओं के अंधा–धूंध प्रयोग से जीवाणुओं में प्रतिरोध क्षमता तेजी से बढ़ रही है। ऐसे जीवाणु वातावरण में फैल जाते है व आम दवाओं से नष्ट भी नहीं होते हैं, जिससे उपचार का मूल्य भी बढ़ जाता है क्योंकि उपचार लम्बे समय तक करना पड़ता है। पशुचिकित्सकों व पशुपालकों को प्रतिजैविक दवाओं के उपयोग में गंभीरता से विचार करना चाहिए, क्योंकि इन दवाओं के अवशेष पशु उत्पादों में आते हैं जो मनुष्यों के लिए हानिकारक है।

प्रतिजैविक के प्रयोग व सावधानियांः

- ❖ प्रतिजैविक दवाओं का उपयोग उचित विधिनुसार पशुचिकित्सकों को सोच समझ कर करना चाहिए क्योंकि इन दवाओं के उपयोग में लापरवाही मनुष्यों व पशुओं दोनों के लिए मृत्यु का कारण बन सकती है।
- ❖ जीवाणुरोधी दवाओं का अनुचित उपयोग जैसे अधिक या कम खुराक, अंधाधुंध उपयोग, घटिया गुणवत्ता वाली दवाओं का उपयोग अत्यधिक हानिकारक है तथा जानलेवा बीमारियों का उद्भव और विकास कर सकती है। अतः इन्हें उपयोग में लेते समय विशेष ध्यान रखें।
- ❖ रोगाणुरोधी दवाओं की बिक्री पर नियंत्रण रखा जाना चाहिए ये दवाईयां केवल पशुचिकित्सक द्वारा ही लिखी जानी चाहिए।
- ❖ पशुपालकों को प्रतिजैविक दवाओं के अंधाधूंध उपयोग से होने वाले नुकसान के लिए जागरूक करना चाहिए।
- ❖ प्रतिजैविक औषधियों के विकल्प के रूप में प्राकृतिक औषधिय पौधो का उपयोग करना चाहिए ताकि स्वंय व पर्यावरण को बचाया जा सके।

डॉ. मनोहर सैन, डॉ. देवेन्द्र चौधरी, डॉ. वैशाली व डॉ. रेखा लोहिया
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।

मृत पशुओं का उचित निस्तारण करें अन्यथा बोटुलिज्म का खतरा हो सकता है

बोटुलिज्म जिसे कर्रा रोग के नाम से भी जाना जाता है, आमतौर पर दुधारू गायों में होने वाला घातक जीवाणु जनित रोग है जो कि क्लोस्ट्रीडियम बोटुलिज्म नामक जीवाणु द्वारा उत्पादित विषकारी पदार्थो के कारण फैलता है।

- गर्मियों के मौसम के शुरूआत के साथ ही मुख्यतया दुधारू गायों के शरीर में फॉस्फोरस व अन्य पोषक तत्वों की कमी की वजह से ये पशु अखाद्य पदार्थ, मिट्टी, मृत पशुओं के अवशेष व हड्डिया खाना शुरू कर देते है जिससे इन पशुओं में बोटुलिज्म रोग फैलता है।
- बोटुलिज्म विष के सामान्य स्त्रोतो में मृत पशुओं के शव, सड़े हुए कार्बनिक पदार्थ, पशुओं को खिलायी जाने वाली सड़ी हुई घास व अनाज तथा खराब हो चुका संक्रमित साईलेज इत्यादि भी शामिल है।

रोग के लक्षणः

- सभी उम्र के गौ पशु और भेड़ बोटुलिज्म के प्रति अधिक संवेदनशील होते है।
- पशुओं के समूह में इस बीमारी का अचानक प्रकोप होने से प्रभावित पशु के आगे के पैर जकड़ जाते है। पशु लड़खड़ाकर चलने लगता है व गंभीर स्थिति में पशु बेहोश भी हो जाता है।
- पशु के मुंह से लार टपकने लगती है व पशु चारा खाना व पानी पीना बंद कर देता है।
- स्थिति गंभीर होने पर पशु के शरीर में विशेष प्रकार का लकवा होना व मांसपेशी कमजोर हो जाती है जिसकी वजह से पशु की जीभ बाहर निकल जाती है तथा पशु जीभ को वापस अंदर लेने में असमर्थ हो जाता है।
- पशु की आंखों की पलकों का पक्षाघात या पलके झुक जाना भी इस बीमारी का एक प्रमुख लक्षण दिखायी देता है।
- उचित समय पर इलाज ना मिलने की वजह से प्रभावित पशु की गंभीर अवस्था में अचानक मृत्यु भी हो जाती है।

निदानः

- बोटुलिज्म या कर्रा रोग का निदान प्रमुख रूप से बीमारी के लक्षणों व प्रभावित पशु के द्वारा मृत पशु–पक्षियों के अवशेष व हड्डियों एवं दुषित घास व साइलेज के सम्पर्क में आने के आधार पर किया जाता है।
- प्रयोगशाला परीक्षण द्वारा क्लोस्ट्रीडियम बोटुलिज्म जीवाणु, बीजाणुओं व विषकारी पदार्थो की उपस्थिति का पता लगाया जा सकता है।
- बोटुलिज्म का संदेह होते ही संक्रमित स्त्रोत से नमूने लेकर बोटुलिज्म विषकारी पदार्थ का पता लगाना सबसे विश्वसनीय परीक्षण है।

उपचारः

- इस रोग के इलाज हेतु पशु चिकित्सक की सलाह लेकर प्रभावित पशु को लक्षणों के आधार पर द्रव चिकित्सा, पेनिसिलिन एंटीबायोटी व मिनरल मिक्सचर देवें।

बोटुलिज्म पर नियंत्रणः

- कर्रा रोग पर नियंत्रण मुख्यतया जागरूकता व अन्य गायों से बचाव से ही हो सकता है यानि बचाव ही उपचार है।
- पशुओं में बोटुलिज्म के जोखिम को कम करने के लिए मृत पशु–पक्षियों के शवों का सावधानीपूर्वक निस्तारण वैज्ञानिक विधि से करना चाहिए।
- मृत पशु–पक्षियों के शवों को खुली में ना छोड़े क्योंकि इनकी काफी कम मात्रा भी अन्य जीवित पशु–पक्षियों के लिए खतरनाक हो सकती है। इसलिए इन्हें नियमानुसार जलाकर या रेंडरिंग द्वारा निपटाया जाना चाहिए अन्यथा मृत पशु के शवों को गड्ढा खोदकर तुंरत जमीन में गाड़ देना चाहिए।
- अत्यधिक जोखिम वाली स्थितियों में बोटुलिज्म के विरूद्व टीकाकरण ही बोटुलिज्म को रोकने का एक मात्र प्रभावी तरीका है इसके लिए नजदीकी पशुचिकित्सक से संम्पर्क कर पशुओं का सही समय पर टीकाकरण करवायें।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

ढ़ाढ़ीयांवाली की रीना ने आधुनिक तकनीक से डेयरी फार्मिंग को किया आसान

सूरतगढ़ तहसील के गाँव ढाढ़ीयाँवाली में रहने वाली रीना रानी ने 12वीं तक शिक्षा ग्रहण करके ग्रहणी होने के साथ गाय पालन का व्यवसाय 2 गायों से शुरू किया। इस व्यवसाय में इन्हें अच्छा मुनाफा होने लगा तो इन्होंने अपने इस व्यवसाय को बढ़ाने की सोची परन्तु इनको इस व्यवसायिक और वैज्ञानिक प्रबंधन कि जानकारी नहीं थी। उसके बाद इन्हें अखबार से पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के बारे में दिये जाने वाले प्रशिक्षणों के बारे में जानकारी मिली। रीना रानी ने पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के वैज्ञानिकों से सम्पर्क करके डेयरी फार्मिंग के वैज्ञानिक प्रबंधन का प्रशिक्षण लिया और अभी वर्तमान में रीना रानी के पास कुल 25 जर्सी, और 3 एच.एफ. गाये हैं जिनसे प्रतिदिन 2 क्विंटल दूध उत्पादन हो रहा है और यह महिने के 1.5–2 लाख रूपये अर्जित कर रही है। इनका गांव शहर के नजदीक होने के कारण दूध की मांग भी अधिक है और अच्छे मूल्य में दूध विक्रय हो रहा है। इन्होंने अपने पशुओं को रखने के लिए मौसम के अनुकूल शैड तैयार किये हैं गर्मी के मौसम में घास–फुस के द्वारा कच्चा छप्पर बनाया गया है, तथा सर्दियों के मौसम में पक्का शैड बना रखा है जिसमें पशुओं को रखते हैं दोनों तरह के शैड में हवा के लिए पंखे लगवा रखें हैं तथा पानी की भी उचित व्यवस्था कर रखी है इन्होनें प्रशिक्षण के दौरान पशुओं के स्वास्थय प्रबंधन की जानकारी प्राप्त कर अपने पशुओं पर प्रयोग करती है। यह समय–समय पर अपने पशुओं को कृमिनाशक दवाईयां देने के साथ ही टीकाकरण भी करवाती रहती है तथा पशुओं को सम्पूर्ण संतुलित आहार खिलाती है। यह अपने पशुओं में नस्ल संवर्धन के लिए कृत्रिम गर्भाधान विधि से गर्भधारण करवाती है तथा प्राथमिक उपचार पशु विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से परामर्श से स्वंय कर लेती है। यह अपने फार्म पर कुछ आधुनिक मशीनों का भी प्रयोग करती है। इन्होंने अपने इस व्यवसाय से 5 लोगों को रोजगार प्रदान किया है। रीना रानी अपने आस–पास के लोगों को जागरूक करने के लिए पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के वैज्ञानिकों द्वारा अपने गांव में प्रशिक्षण शिविर का भी आयोजन करवाती है। पशुधन उत्पादन की उन्नत तकनीकों जैसे अजोला, यूरिया मोलासेस मिनरल ब्लॉक एवं स्वंय निर्मित संतुलित पशु आहार आदि को अपनाने की इच्छा रखती है और पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के वैज्ञानिकों से सम्पर्क में रहकर सम्पूर्ण वैज्ञानिक प्रबंधन के साथ व्यवसाय को बढ़ाना चाहती है। रीना रानी अपने इस व्यवसाय से क्षेत्र की अन्य महिलाओं के लिए भी प्रेरणा का स्त्रोत बनी है इनके आस–पास की महिलाएं भी इनसे जानकारी प्राप्त करती है। इस सफलता का श्रेय रीना रानी अपने परिवार, ईश्वर और पशु विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों को देती है।

सम्पर्क- रीना रानी
वार्ड नं. 10 नया, गांव ढाढ़ीयाँवाली, सूरतगढ़ (मो. 9587480003)।

निदेशक की कलम से...

भीषण गर्मी में पशुओं का भी रखें ध्यान ताकि उन्हें लू न लगे

भीषण गर्मी का मौसम चल रहा है तथा लू का प्रकोप भी बना हुआ है। इस भीषण गर्मी में मनुष्य ही नहीं पशु–पक्षी सहित जीव–जन्तु भी बेहाल हो रहें हैं। गर्मी में थोड़ी सी भी लापरवाही से पशुपालकों को पशुधन की क्षति हो सकती है। इस मौसम में दुधारू पशुओं की दूध देने की क्षमता, भोजन की मात्रा और व्यवहार में भी बदलाव आ जाता है। ऐसे मौसम में विशेषकर दुधारू पशुओं तथा छोटे पशुओं की विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है। अधिक गर्मी में पशु के शारीरिक तंत्र में व्यवधान आ जाता है, जिसके कारण गर्मी पशु के शरीर से बाहर नहीं निकलती है, जिसकी वजह से पशु को तेज बुखार आ जाता है, बैचेनी बढ़ जाती है, इसे ही लू लगना कहते हैं। यह रोग मुख्य रूप से अधिक गर्म मौसम में जब वातावरण में नमी और ठंडक की कमी हो जाती है तथा तेज गर्म हवाऐं चलती है तब इसका प्रकोप अधिक होता है। रेगीस्तानी क्षेत्र में तेज लू व सूखी गर्मी पड़ने के कारण वहां पशुओं की अधिक हानि होती हैं। लू लगने पर पशु को तेज बुखार आता है, पशु खाना–पीना छोड़ देता है, मुंह से जीभ बाहर निकालकर श्वास लेने लगता है। लू लगने पर पशु की ऑख व नाक लाल हो जाती हैं। प्रायः पशु की नाक से खून बहने लग जाता है तथा कई बार समय पर उपचार नहीं मिलने पर पशु चक्कर खाकर गिर जाता है तथा बेहोशी की हालत में पशु की मृत्यु भी हो सकती है। पशुओं को लू से बचाने के लिए पशुपालकों को विशेष सावधानियां रखनी चाहिए। पशु के आवास व आहार पर विशेष ध्यान देना चाहिए। पशु के आवास में स्वच्छ वायु जाने तथा दूषित वायु बाहर निकलने के लिए पर्याप्त रोशनदान होने चाहिए। पशुओं को खुले में नहीं बांधना चाहिए। गर्म दिनों में पशुओं को दिन में कम से कम एक बार तो नहलाना ही चाहिए। पशुओं को स्वच्छ ठंडा पानी पिलावें। देशी गायों की बजाय संकर नस्ल की गायें गर्मी से ज्यादा प्रभावित होती है अतः इनके आवास में कुलर व पंखों की व्यवस्था करनी चाहिए। गर्मी के मौसम में पशु के दूध उत्पादन को बनाये रखने के लिए आहार पर विशेष ध्यान देना चाहिए। गर्मी के मौसम में पशुओं को हरा चारा अधिक मात्रा में उपलब्ध करावें, क्योंकि हरे चारे से उदर पूर्ति के साथ–साथ पानी भी पर्याप्त मात्रा में मिलता है। इस मौसम में पशु को भूख कम व प्यास अधिक लगती है अतः दिन में तीन बार पशुओं को पानी पिलावें, ताकि शरीर के तापक्रम को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। इन व्यवस्थाओं के साथ–साथ पशुपालक यह भी ध्यान रखे कि लू लगने पर तुरंत पशुचिकित्सक से सम्पर्क कर बीमार पशु का इलाज करावें जिससे आर्थिक हानि होने से बचा जा सके।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

"धीणे री बात्यां"
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया